International Journal of Education, Modern Management, Applied Science & Social Science (IJEMMASSS)
An International Quarterly bi-lingual Multidisciplinary Double Blind Open Access Peer Reviewed Refereed Journal
ISSN:2581-9925, Impact Factor (Cosmos: 7.555 & I2OR: 5.105), Volume 08, No. 03(II), July-September, 2026, pp. 204-210

महाविद्यालयों के विभिन्न संकायों (कला, विज्ञान, वाणिज्य) के विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों और शैक्षिक उपलब्धि पर ई–संसाधनों का प्रभावः जयपुर जिले के संदर्भ में

वसुन्धरा शर्मा*

शोधार्थी, महात्मा ज्योतिराव फुले विश्वविद्यालय, जयपुर, राजस्थान।

*Corresponding Author: vasundhara20584@gmail.com

Citation: शर्मा, वसुन्धरा (2026). महाविद्यालयों के विभिन्न संकायों (कला, विज्ञान, वाणिज्य) के विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों और शैक्षिक उपलब्धि पर ई–संसाधनों का प्रभावः जयपुर जिले के संदर्भ में. International Journal of Education, Modern Management, Applied Science & Social Science, 08(03(II)), 204–210.

सार

सूचना और संचार प्रौद्योगिकी (ICT) के इस आधुनिक युग में उच्च शिक्षा पारिस्थितिकी तंत्र में डिजिटल संसाधनों का प्रभाव निरंतर बढ़ता जा रहा है। प्रस्तुत शोध पत्र का मुख्य उद्देश्य जयपुर जिले (राजस्थान) के विभिन्न महाविद्यालयों के कला, विज्ञान और वाणिज्य संकायों के विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों (Study Habits) और शैक्षिक उपलब्धि (Academic Achievement) पर ई–संसाधनों (E-Resources) की उपयोगिता के प्रभाव का एक व्यापक तुलनात्मक अध्ययन करना है। शोध के लिए वर्णनात्मक सर्वेक्षण पद्धति (Descriptive Survey Method) का प्रयोग करते हुए यादृच्छिक प्रतिचयन विधि द्वारा जयपुर जिले के उच्च शिक्षण संस्थानों से कुल 600 विद्यार्थियों (कलाः 200, विज्ञानः 200, वाणिज्यः 200, जिसमें 300 छात्र और 300 छात्राएं शामिल हैं) का संतुलित प्रतिदर्श (Sample) चयनित किया गया। विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों को मापने के लिए एक स्वनिर्मित अध्ययन आदत मापनी (Study Habits Scale) का उपयोग किया गया तथा शैक्षिक उपलब्धि को मापने के लिए उनके गत वर्ष के परीक्षा परिणाम के प्रतिशत (%) को आधार बनाया गया। विभिन्न समूहों के बीच सांख्यिकीय अंतरों के विश्लेषण और 6 शून्य परिकल्पनाओं के परीक्षण के लिए स्वतंत्र प्रतिदर्श टी–परीक्षण (t-test) तकनीक का अनुप्रयोग किया गया। सांख्यिकीय निष्कर्षों से स्पष्ट हुआ कि संकाय के कम्बाइंड स्तर पर विज्ञान (Mean = 174.24) और कला (Mean = 173.28) संकाय के विद्यार्थियों का अध्ययन आदत स्कोर वाणिज्य संकाय (Mean = 170.70) की तुलना में क्रमशः 0.01 और 0.05 स्तर पर सार्थक रूप से श्रेष्ठ पाया गया। परीक्षा परिणाम प्रतिशत के मामले में भी विज्ञान के विद्यार्थियों का प्रदर्शन (72.99%) वाणिज्य (68.96%) से सांख्यिकीय रूप से सार्थक रूप से बेहतर था। लैंगिक विश्लेषण (ळमदकमत ।दंसलेपे) के परिणामों से स्पष्ट हुआ कि ई–संसाधनों के उपयोग के स्तर पर छात्र–छात्राओं में समानता होने के बावजूद, कला (t = 2.455) आर वाणिज्य (t = 2.878) संकाय के भीतर छात्राओं का परीक्षा परिणाम प्रतिशत छात्रों की तुलना में सांख्यिकीय रूप से सार्थक रूप से उच्च और श्रेष्ठ रहा है। यह अध्ययन जयपुर जिले में ई–संसाधनों के व्यावहारिक प्रबंधन और वाणिज्य संकाय हेतु विशेष डिजिटल मार्गदर्शन कार्यक्रमों की आवश्यकता पर बल देता है।

शब्दकोशः *ई–संसाधन, अध्ययन आदतें, शैक्षिक उपलब्धि, परीक्षा परिणाम प्रतिशत, जयपुर जिला, टी–परीक्षण (t-test)।*

* *Copyright © 2026 by Author's and Licensed by Inspira. This is an open access article distributed under the Creative Commons Attribution License which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work properly cited.*

प्रस्तावना

इक्कीसवीं सदी के उत्तरार्ध में डिजिटल क्रांति ने मानव जीवन की व्यावहारिक आदतों में व्यापक परिवर्तन किए हैं। आधुनिक उच्च शिक्षण संस्थानों में पारंपरिक मुद्रित सामग्रियों का स्थान अब तेजी से ई–संसाधनों (*E-Resources*) जैसे ई–बुक्स, ई–जर्नल्स और ऑनलाइन डेटाबेस ने ले लिया है। राजस्थान के प्रमुख शैक्षणिक केंद्र होने के नाते, जयपुर जिले के महाविद्यालयों में डिजिटल संसाधनों की उपलब्धता अत्यंत तीव्र गति से बढ़ी है । इस तकनीकी सुलभता के कारण विद्यार्थियों के ज्ञान अर्जन के तरीकों के साथ–साथ उनकी अध्ययन आदतों (*Study Habits*) और उनके अंतिम शैक्षणिक आउटपुट यानी शैक्षिक उपलब्धि (*Academic Achievement*) में भी अमूलचूल परिवर्तन आए हैं।

शैक्षणिक मनोविज्ञान में अध्ययन आदतों को उन व्यवहारों और तौर–तरीकों के रूप में परिभाषित किया जाता है जो विद्यार्थी अपनी अध्ययन प्रक्रिया को सुव्यवस्थित करने के लिए अपनाते हैं। इसमें मुख्य रूप से समय प्रबंधन, एकाग्रता का स्तर और नोट्स निर्माण की शैली शामिल होती है। वहीं दूसरी ओर, शैक्षिक उपलब्धि विद्यार्थी की उस क्षमता का परिचय देती है जो वह पाठ्यक्रम पूरा करने के उपरांत परीक्षाओं में प्रदर्शित करता है, जिसे मापने के लिए गत वर्ष के परीक्षा परिणाम का प्रतिशत (%) सबसे प्रामाणिक मापदंड है। प्रस्तुत शोध पत्र जयपुर जिले के विशिष्ट संदर्भ में इन्हीं व्यावहारिक और सांख्यिकीय अंतरों का स्वतंत्र प्रतिदर्श टी–परीक्षण (*t-test*) के माध्यम से एक प्रामाणिक विश्लेषण प्रस्तुत करता है।

प्रतियों का स्पष्टीकरण (Conceptual Framework of Variables)

- **महाविद्यालय का अर्थ (**Meaning of Mahavidyalaya**)**

उच्च शिक्षा के क्षेत्र में महाविद्यालय (College) वह औपचारिक शैक्षणिक संस्था है जो माध्यमिक शिक्षा पूरी करने के बाद विद्यार्थियों को स्नातक (Undergraduate) और स्नातकोत्तर (Postgraduate) स्तर पर विशिष्ट विषयों का गहन ज्ञान प्रदान करती है। महाविद्यालय केवल ज्ञान हस्तांतरण का केंद्र नहीं हैं, बल्कि यह एक ऐसा शैक्षणिक वातावरण है जहाँ विद्यार्थियों को पुस्तकालय, ई–संसाधन, प्रयोगशालाएँ और अकादमिक मेंटरशिप मिलती है। इस शोध के संदर्भ में, जयपुर जिले के कला, विज्ञान और वाणिज्य संकायों के महाविद्यालयों को उस आधारभूत ढांचे के रूप में देखा गया है जो विद्यार्थियों को डिजिटल जानकारी के साधन (E-Resources) उपलब्ध कराते हैं।

- **अध्ययन आदत का अर्थ (**Meaning of Study Habits**)**

शैक्षणिक मनोविज्ञान (Educational Psychology) में अध्ययन आदत (Study Habits) से तात्पर्य उन व्यावहारिक तौर–तरीकों, कौशलों, नियोजित समय प्रबंधन और निरंतरता से है, जिसे एक विद्यार्थी अपने अधिगम (Learning) को प्रभावी बनाने के लिए नियमित रूप से अपनाता है। यह विद्यार्थी की एक सीखी हुई व्यवहार प्रणाली (Learned Behavior System) है, जिसमें निम्नलिखित आयाम शामिल होते हैं –

- **समय प्रबंधन (**Time Management**)** – पढ़ाई के घंटों का सही नियोजन।
- **एकाग्रता (**Concentration**)** – पढ़ते समय ध्यान भटकने (Digital Distractions) को नियंत्रित करना।
- **पठन शैली (**Reading Style**)** – डिजिटल स्क्रीन पर केवल सतही पढ़ने (Skim Reading) के बजाय गहन अध्ययन (Deep Learning) करना।
- **नोट्स निर्माण (**Notes Preparation**)** – ई–संसाधनों से महत्वपूर्ण तथ्यों को संकलित करना।

डिजिटल युग में, पारंपरिक पठन आदतों का स्थान अब ई–बुक्स और ऑनलाइन जर्नल्स के प्रभावी उपयोग की आदतों ने ले लिया है।

शैक्षिक उपलब्धि का अर्थ (Meaning of Academic Achievement)

शैक्षिक उपलब्धि (Academic Achievement) से अभिप्राय विद्यार्थी की उस शैक्षणिक सफलता या प्रदर्शन के स्तर से है जो वह किसी विशिष्ट पाठ्यक्रम या सत्र के अंत में परीक्षाओं के माध्यम से प्रदर्शित करता

है। यह विद्यार्थी के ज्ञान अर्जन, विषय–वस्तु पर पकड़ और उसकी संज्ञानात्मक क्षमता (Cognitive Ability) का एक वस्तुनिष्ठ मापदंड है। शिक्षा के क्षेत्र में शोध के अंतर्गत, विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि को मापने के लिए उनके गत वर्ष के परीक्षा परिणाम के प्रतिशत (%) को सबसे प्रामाणिक सूचक माना जाता है। इस शोध में यह देखा गया है कि ई–संसाधनों के माध्यम से प्राप्त ज्ञान किस प्रकार विद्यार्थियों के परीक्षा परिणाम प्रतिशत को प्रभावित करता है।

शोध के उद्देश्य (Objectives of the Study)

प्रस्तुत शोध पत्र में जयपुर जिले के महाविद्यालयीन विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों और शैक्षिक उपलब्धि पर ई–संसाधनों की उपयोगिता के प्रभाव का सांख्यिकीय मूल्यांकन करने के लिए निम्नलिखित 2 मास्टर उद्देश्यों को निर्धारित किया गया है

- उद्देश्य 1 – महाविद्यालयों के कला, विज्ञान, वाणिज्य वर्ग के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर ई–संसाधनों के प्रभाव का अध्ययन करना।
- उद्देश्य 2 – महाविद्यालयों के कला, विज्ञान, वाणिज्य वर्ग के विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों पर ई–संसाधनों के प्रभाव का अध्ययन करना।

शोध की परिकल्पनाएँ (Hypotheses of the Study)

उपरोक्त दोनों मास्टर उद्देश्यों के अंतर्गत संकायों के युग्मों (Pairs) के मध्य तुलनात्मक विश्लेषण और टी–परीक्षण (t-test) द्वारा सत्यापन हेतु निम्नलिखित 6 शून्य परिकल्पनाएँ (Null Hypotheses) निर्मित की गई हैं, जिनका परीक्षण गया है –

शैक्षिक उपलब्धि (Academic Achievement) **से संबंधित परिकल्पनाएँ –**

H_{01} – महाविद्यालयों के कला व विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों द्वारा ई–संसाधनों के उपयोग से उनकी शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता हैं।

H_{02} – महाविद्यालयों के विज्ञान व वाणिज्य वर्ग के विद्यार्थियों द्वारा ई–संसाधनों के उपयोग से उनकी शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता हैं।

H_{03} – महाविद्यालयों के कला व वाणिज्य वर्ग के विद्यार्थियों द्वारा ई–संसाधनों के उपयोग से उनकी शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता हैं।

अध्ययन आदतों (Study Habits) **से संबंधित परिकल्पनाएँ** –

H_{04} – महाविद्यालयों के कला व विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों द्वारा ई–संसाधनों के उपयोग से उनकी अध्ययन आदतों में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता हैं।

H_{05} – महाविद्यालयों के विज्ञान व वाणिज्य वर्ग के विद्यार्थियों द्वारा ई–संसाधनों के उपयोग से उनकी अध्ययन आदतों में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता हैं।

H_{06} – महाविद्यालयों के कला व वाणिज्य वर्ग के विद्यार्थियों द्वारा ई–संसाधनों के उपयोग से उनकी अध्ययन आदतों में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता हैं।

अनुसंधान कार्यप्रणाली (Research Methodology)

- **अनुसंधान डिजाइन** – प्रस्तुत अध्ययन में वर्णनात्मक सर्वेक्षण अनुसंधान डिजाइन (Descriptive Survey Research Design) के अंतर्गत मात्रात्मक दृष्टिकोण (Quantitative Approach) का उपयोग किया गया है
- **प्रतिदर्श** (Sample) – जयपुर जिले के विभिन्न महाविद्यालयों से स्तरीकृत यादृच्छिक प्रतिचयन विधि (Stratified Random Sampling Technique) द्वारा कुल 600 विद्यार्थी चयनित किए गए –

- कला संकाय (Arts) – 200 विद्यार्थी (100 छात्र, 100 छात्राएं)
- विज्ञान संकाय (Science) – 200 विद्यार्थी (100 छात्र, 100 छात्राएं)
- वाणिज्य संकाय (Commerce) – 200 विद्यार्थी (100 छात्र, 100 छात्राएं)

- **अनुसंधान के चर** – स्वतंत्र चर जनसांख्यिकीय कारक (संकाय और लिंग) हैं। आश्रित चर विद्यार्थियों का अध्ययन आदत स्कोर तथा गत वर्ष के परीक्षा परिणाम का प्रतिशत (%) है।
- **सांख्यिकीय विश्लेषण तकनीक** – एकत्रित संख्यात्मक डेटा के विश्लेषण के लिए मध्यमान (Mean), मानक विचलन (Standard Deviation & S.D.) और स्वतंत्र प्रतिदर्श टी–परीक्षण (t-test) का अनुप्रयोग किया गया।

डेटा विश्लेषण, व्याख्या एवं परिणाम (Data Analysis - Findings)

चर 1: विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों (Study Habits) का सांख्यिकीय विश्लेषण

यह विश्लेषण उद्देश्य 2 तथा उससे संबंधित शून्य परिकल्पनाओं (H_{04}, H_{05}, H_{06}) के सांख्यिकीय परीक्षण को दर्शाता है।

तालिका 1: संकाय–वार छात्र एवं छात्राओं के अध्ययन आदत स्कोर का वास्तविक टी–परीक्षण (t-test) विश्लेषण

(प्रत्येक समूह के लिए N = 100, Degrees of Freedom, df = 198)

संकाय	समूह	संख्या (N)	अध्ययन आदत मध्यमान स्कोर (Mean)	मानक विचलन (S.D.)	गणनाकृत टी–मूल्य	सार्थकता स्तर	परिणाम
कला	छात्र	100	173.21	8.06	0.093	सार्थक नहीं है (p > 0.05)	स्वीकृत
	छात्रा	100	173.34	11.40			
विज्ञान	छात्र	100	175.57	7.95	1.947	सार्थक नहीं है (p > 0.05)	स्वीकृत
	छात्रा	100	172.90	11.13			
वाणिज्य	छात्र	100	171.04	10.93	0.426	सार्थक नहीं है (p > 0-05)	स्वीकृत
	छात्रा	100	170.36	11.64			

तालिका 2: विभिन्न संकायों के संयुक्त विद्यार्थियों ( ) के अध्ययन आदत स्कोर का वास्तविक टी–परीक्षण विश्लेषण

(df = 398)

क्र. सं.	तुलनात्मक समूह	संख्या (N)	संयुक्त योग	संयुक्त मध्यमान (Mean)	संयुक्त मानक विचलन (S.D.)	गणनाकृत टी–मूल्य t-value	सार्थकता स्तर	परिणाम
1	कला संकाय	200	34,655	173.28	9.87	0.978	सार्थक नहीं है (p > 0.05)	H_{04} स्वीकृत
	विज्ञान संकाय	200	34,847	74.24	9.7			
2	विज्ञान संकाय	200	34,847	174.24	9.76	3.348	0.01 स्तर पर सार्थक है (p < 0.01)	H_{05} अस्वीकृत
	वाणिज्य संकाय	200	34,140	170.70	11.30			
3	कला संकाय	200	34,655	173.28	9.87	2.427	0.05 स्तर पर सार्थक है (p < 0.05)	H_{06} अस्वीकृत
	वाणिज्य संकाय	200	34,140	170.70	11.30			

चर 2% विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि (परीक्षा परिणाम प्रतिशत) का सांख्यिकीय विश्लेषण

यह विश्लेषण उद्देश्य 1 तथा उससे संबंधित शून्य परिकल्पनाओं (H_{01}, H_{02}, H_{03}) के सांख्यिकीय परीक्षण को दर्शाता है।

तालिका 3: संकाय–वार छात्र एवं छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि (प्रतिशत) का वास्तविक टी–परीक्षण विश्लेषण

(प्रत्येक समूह के लिए N = 100, df = 198)

संकाय	समूह	संख्या (N)	मध्यमान प्रतिशत (Mean %)	मानक विचलन (S.D.)	गणनाकृत टी–मूल्य (t-value)	सार्थकता स्तर	परिणाम
कला	छात्र	100	68.74	13.93	2.455	0.05 स्तर पर सार्थक है	अस्वीकृत
	छात्रा	100	73.94	15.96			
विज्ञान	छात्र	100	71.18	13.09	1.778	सार्थक नहीं है	स्वीकृत
	छात्रा	100	74.80	15.59			
वाणिज्य	छात्र	100	65.80	14.09	2.878	0.01 स्तर पर सार्थक है	अस्वीकृत
	छात्रा	100	72.13	16.89			

तालिका 4: विभिन्न संकायों के कम्बाइंड विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि (प्रतिशत) का वास्तविक टी–परीक्षण विश्लेषण

(df = 398)

क्र. सं.	तुलनात्मक समूह (Pairs)	संख्या (N)	परीक्षा परिणाम मध्यमान (Mean)	मानक विचलन (S.D.)	गणनाकृत टी–मूल्य (t-value)	सार्थकता स्तर (Significance)	परिणाम (Null Hypothesis)
1	कला व विज्ञान संकाय	200 200	71.34 72.99	15.16 14.47	1.113	सार्थक नहीं है	H_{01} स्वीकृत
2	विज्ञान व वाणिज्य संकाय	200 200	72.99 68.96	14.47 15.84	2.656	0.01 स्तर पर सार्थक है	H_{02} अस्वीकृत
3	कला व वाणिज्य संकाय	200 200	71.34 68.96	15.16 15.84	1.535	सार्थक नहीं है	H_{03} स्वीकृत

चर्चा (Discussion)

जयपुर जिले के वास्तविक डेटा विश्लेषण से प्राप्त निष्कर्ष शिक्षा नीति और छात्र व्यवहार के परिप्रेक्ष्य में अत्यंत महत्वपूर्ण हैं। यह शोध पत्र यह स्पष्ट करता है कि जहाँ ई–संसाधनों तक पहुँच और उनके उपयोग के व्यावहारिक तौर–तरीकों (अध्ययन आदतों Score) के स्तर पर छात्र–छात्राओं में सांख्यिकीय रूप से पूर्ण लैंगिक समानता (तालिका 5.1) देखी गई है, वहीं जब इन संसाधनों के वास्तविक शैक्षणिक आउटपुट (परीक्षा परिणाम प्रतिशत) की बात आती है, तो कला और वाणिज्य संकाय की छात्राएं (Girls) छात्रों की तुलना में अत्यधिक श्रेष्ठ प्रदर्शन कर रही हैं।

सबसे विचारणीय निष्कर्ष वाणिज्य संकाय का है। वाणिज्य संकाय के विद्यार्थियों का कम्बाइंड अध्ययन आदत स्कोर (170.70) सांख्यिकीय रूप से सबसे न्यूनतम दर्ज किया गया, और यही मुख्य व्यावहारिक कारण रहा कि उनका अंतिम परीक्षा परिणाम प्रतिशत (68.96%) भी अन्य संकायों की तुलना में सबसे कम रहा [Singh]. यह सांख्यिकीय अंतर्संबंध यह सिद्ध करता है कि केवल ई–संसाधनों की उपलब्धता ही पर्याप्त नहीं है, बल्कि विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों की सुदृढ़ता ही शैक्षिक उपलब्धि को निर्धारित करने वाला वास्तविक उत्प्रेरक है। यह निष्कर्ष नाइजीरियाई शोधकर्ताओं यूसुफ और सॉन्ग (2024) तथा डारामोला (2024) के उन वैश्विक अध्ययनों

की पूर्णतः संपुष्टि करता है जो उच्च शिक्षा में तकनीकी साक्षरता प्रशिक्षण और व्यवस्थित अध्ययन आदतों के महत्व को रेखांकित करते हैं।

निष्कर्ष एवं सुझाव (Conclusion & Suggestions)

निष्कर्ष (Conclusion)

इस शोध पत्र का समग्र निष्कर्ष यह है कि जयपुर जिले के महाविद्यालयों में ई–संसाधनों की उपयोगिता के इस डिजिटल दौर में विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों पर लिंग का कोई प्रभाव नहीं पड़ता है, परंतु विद्यार्थी का शैक्षणिक संकाय (Faculty) उनकी अध्ययन आदतों तथा शैक्षिक उपलब्धि दोनों को निर्धारित करने में एक मुख्य कारक है [local]. वाणिज्य संकाय के विद्यार्थियों में डिजिटल संसाधनों के प्रति कम व्यवस्थित अध्ययन आदतें पाई गई हैं, जो सीधे तौर पर उनके न्यूनतम परीक्षा परिणाम प्रतिशत को प्रभावित कर रही हैं।

सुझाव (Suggestions)

- **वाणिज्य संकाय के लिए विशेष श्स्टडी स्किलश वर्कशॉपः** जयपुर जिले के महाविद्यालयों को वाणिज्य संकाय के छात्रों के लिए विशेष समय प्रबंधन, डिजिटल नोट्स निर्माण और एकाग्रता संवर्धन कार्यशालाएं आयोजित करनी चाहिए ताकि उनकी अध्ययन आदतों में सुधार लाया जा सके।
- **विश्वविद्यालय स्तर पर सतत डिजिटल प्रशिक्षणः** यूसुफ और सॉन्ग (2024) के निष्कर्षों के आलोक में यह सुझाव दिया जाता है कि छात्रों को प्रथम वर्ष से ही ई–संसाधनों के प्रभावी उपयोग का सतत प्रशिक्षण दिया जाए ताकि उनकी शैक्षणिक रूपांतरण क्षमता (Learning Conversion Rate) को अधिकतम किया जा सके।

संदर्भ ग्रंथ सूची (References)

1. कौल, एल. (2019) – शैक्षणिक अनुसंधान की कार्यप्रणाली. विकास पब्लिशिंग हाउस. ISBN: 978. 9325982949
2. गैरेट, एच. ई. (2012) – शिक्षा और मनोविज्ञान में सांख्यिकी. कल्याणी पब्लिशर्स. ISBN: 978. 8189253004 गुप्ता, एस. पी. (2021) – सांख्यिकीय विधियाँ. सुल्तान चंद एंड संस. ISBN: 978. 9351611769.
3. बेस्ट, जे. डब्ल्यू., और कान, जे. वी. (2016). शिक्षा में अनुसंधान (10वां संस्करण). पियर्सन क्लिनिकल एंड प्रोफेशनल इनफार्मेशन इंडिया. ISBN: 978.9332574519
4. सिंह, एस. (2021). डिजिटल युग में उच्च शिक्षा और पुस्तकालय विज्ञान. एस्से पब्लिकेशन्स. ISBN: 978–8170009627

शोध पत्र (Research Papers)

5. राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय शोध पत्र (Research Papers - Verified Details)

6. परमार, एन. डी. (2025) – अहमदाबाद शहर के कॉलेज छात्रों के शैक्षणिक प्रदर्शन को बढ़ाने में डिजिटल पुस्तकालयों की भूमिका (The role of digital libraries in enhancing academic performance of college students from Ahmedabad city). इंटरनेशनल जर्नल ऑफ एप्लाइड रिसर्च, 11(8), 390–394. https://scholar.google.com/citations\userPhjhE4YAAAAJ&hl

7. साहू, एम., एवं वर्मा, एम. (2022) – रायपुर शहर के कला, सामाजिक विज्ञान और विज्ञान संकाय के कॉलेज छात्रों द्वारा ई–संसाधनों का उपयोगः एक तुलनात्मक अध्ययन (Use of E-Resources by College Students of Arts, Social Science and Science Stream of Raipur city: A Comparative Study). जर्नल ऑफ रविशंकर यूनिवर्सिटी (पार्ट–एः सोशल साइंसेज), 28(1), 1–7. https://jru-a-com/HTMLPaper-aspX\Journal2022-28-1-7

8. रॉय, पी. बी., मिस्टी, एस. टी., रहमान, जे., एवं अजीज, डी. ए. बी. (2023) – पढ़ने की आदतों को बढ़ावा देने में ई–संसाधनों का प्रभावः केंद्रीय पुस्तकालय उपयोगकर्ताओं के बीच एक अध्ययन (Impact of E&resources in Promoting Reading Habits: A Study among the Central Library Users of University of Rajshahi] Bangladesh). लाइब्रेरी फिलॉसफी एंड प्रैक्टिस (ई–जर्नल), 2023, 1–15. https://orcid-org/0000-0002-6143&8917

9. कुमार, बी. एच., कुमार, एस., वी., नीरज, एवं सांगन, डब्ल्यू. (2025) – विद्यार्थियों के बीच ई–बुक्स और डिजिटल पुस्तकालयों का प्रभाव (Impact Of E-Books And Digital Libraries Among Students). इंटरनेशनल जर्नल ऑफ क्रिएटिव रिसर्च थॉट्स (IJCRT), 13(3), i18-i23.

10. डारामोला, एफ. ओ. (2024) – अंडरग्रेजुएट छात्रों के बीच सीखने के लिए ई–संसाधनों का इस्तेमालः दूरस्थ शिक्षा के संदर्भ में एक विश्लेषणात्मक अध्ययन (Undergraduate Students' Utilization of E-Resources for Learning). इंटरनेशनल जर्नल ऑफ इंटेलेक्चुअल डिस्कोर्स (IJID), 6(2), 556–568.

11. यूसुफ, जे. एम., एवं सॉन्ग, यू. एम. (2024) – नाइजीरिया के जिगावा राज्य में अंडरग्रेजुएट छात्रों की एकेडमिक उपलब्धि के अनुमानक के तौर पर डिजिटल जानकारी के साधनों का इस्तेमाल (Utilization of Digital Information Tools as Predictors of Academic Achievement). फेडरल यूनिवर्सिटी डुटसे जर्नल ऑफ लाइब्रेरी एंड इंफॉर्मेशन साइंस (FUDJLIS), 2(1), 45–59.

❑❑❑